शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मई 2024
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में स्त्री चेतना

डॉ. रेणु
हिंदी विभाग
राजकीय कन्या महाविद्यालय
कुचामन सिटी, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

जयशंकर प्रसाद हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, नाटककार, और उपन्यासकारों में से एक हैं। उनके साहित्य में नारी चेतना का एक महत्वपूर्ण स्थान है। प्रसाद की कृतियों में महिलाओं की स्थिति, उनकी समस्याओं और उनके अधिकारों पर गहन चिंतन मिलता है। उन्होंने अपने लेखन में नारी के विभिन्न रूपों और उनके संघर्षों को उभारा है। प्रसाद का मानना था कि नारी समाज का आधार है और उसकी प्रगति से ही समाज की प्रगति संभव है। उन्होंने अपने साहित्य में नारी को केवल एक कोमल और सुकोमल प्राणी के रूप में नहीं बल्कि एक सशक्त, स्वाभिमानी और जागरूक व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया है। उनके काव्य संग्रह 'कामायनी' में श्रद्धा और इड़ा के पात्र नारी चेतना के अद्वितीय उदाहरण हैं। श्रद्धा नारी के प्रेम, त्याग और करुणा का प्रतीक है, वहीं इड़ा नारी के ज्ञान, विवेक और सक्रियता की प्रतीक है। प्रसाद के नाटकों में भी नारी पात्र प्रमुख भूमिका निभाते हैं। 'चन्द्रगुप्त और 'ध्रुवस्वामिनी जैसे नाटकों में नारी का सशक्त चित्रण मिलता है। ध्रुवस्वामिनी एक ऐसी नारी है जो अपने अधिकारों के प्रति सजग है और अन्याय के खिलाफ संघर्ष करती है। उनकी रचनाओं में नारी केवल पृष्ठभूमि में नहीं रहती बल्कि कथा का केंद्रीय पात्र बनकर उभरती है। जयशंकर प्रसाद के उपन्यासों में भी नारी चेतना का गहन अध्ययन मिलता है। 'तितली' और 'कंकाल' जैसे उपन्यासों में उन्होंने नारी के मनोविज्ञान, उसकी इच्छाओं और उसकी स्वतंत्रता की आवश्यकता को बखूबी चित्रित किया है।

जयशंकर ने अपने लेखन के माध्यम से नारी को एक नई पहचान और सम्मान दिलाने का प्रयास किया है, जिससे नारी समाज में अपनी सही जगह पा सके। प्रसाद का नारी संबंधी दृष्टिकोण उनके युग से बहुत आगे का थाऔर उनके साहित्य में नारी चेतना आज भी प्रासंगिक और प्रेरणादायक बनी हुई है।

बीज वाक्य : *स्त्री चेतना, मनोविज्ञान, साहित्य, मानवीय गुण*

प्रस्तावना

छायावाद के प्रमुख आधारस्तंभ, साहित्य में इतिहास को आश्रय देने वाले, प्रकृति और प्रेम के उद्गात रूप के चितेरे, कहानी, नाटक और कविता तीनों को अपने लिखावट में बांधने वालेए कालजयी साहित्यकार जयशंकर प्रसाद का रचना संसार हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है। जयशंकर प्रसाद के साहित्य में प्रेम और सौंदर्य का चित्रण हुआ है। प्रसाद के साहित्य में सूक्ष्मता और परिवेश की सघनता है मन की ग्रंथियों को खोलकर प्रसाद जी ने अपनी रचनाओं में हृदय की विशालता का परिचय दिया है।

स्त्री सृष्टि का सृजन है। वह परिवार का आधार है और उसके समर्पण से प्रेरित और प्रेम से पोषित होकर ही पुरुष कर्मण्य बनता है। वैदिक युग में भी श्यत्रनार्यस्तुपुज्यंतेरमंते तत्र देवता[1] कहकर स्त्री के अस्तित्व को महत्व प्रदान किया गया है। हिंदी साहित्य के अंतर्गत आधुनिक काल की बात करें तो इस समय एक

और भारतीय परंपराओं का निर्वहन और दूसरी और पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दोनों का मेल हो रहा था और इस संक्रमण का प्रभाव साहित्य में पात्रों पर भी परिलक्षित होता है।

इस संक्रमण काल में छायावाद के आधार स्तंभ जयशंकर प्रसाद ने स्त्री चरित्र के अनेक पक्षों को गरिमामयी भाषा के कागज परए भारतीयता के लेखनी को, प्रेम और त्याग त्याग के रंगों में भिगोकर ऐसे सुंदर चित्र खींचे जो हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि बन गए। जयशंकर प्रसाद के साहित्य को पढ़कर पाठक पात्रों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता॥ हर पात्र अपने आप में विशेष है और उसका चरित्र चित्रण उसे और विशेष बना देता है।

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में स्त्री चेतना

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में स्त्री सामान्य परिवेश में जीती है। वह उच्च पद पर आसीन है तो भी मानवीय गुणों से परिपूर्ण है॥ परिश्रम, त्याग, समर्पण यह मानवीय गुण प्रसाद के स्त्री चरित्रों के आभूषण है। प्रसाद के स्त्री पात्र अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं लेकिन मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते। वे जानते हैं कि दूसरों की इज्जत उछाल कर स्वयं इज्जतदार नहीं रहा जा सकता।

स्त्री चरित्र चित्रण में जयशंकर प्रसाद सिद्धहस्त हैं, उनकी स्त्री पात्रों का हृदय-साम्राज्य अत्यंत विस्तृत और अथाह है, वह अपना सर्वस्व त्याग कर भी मानवीय गुणों की रक्षा हेतु तत्पर है। वह पुरुष के बेरंग जीवन का रंगीन चित्र हैं। नारी के प्रति प्रसाद जी की उदार दृष्टि आंसू में व्यापक रूप से परिलक्षित होती है :

चंचल स्नान कर आवे
चंद्रिका पर्व में जैसे
इस पावन तन की शोभा
आलोक मधुर थी ऐसे।2

कामायनी महाकाव्य में जयशंकर प्रसाद ने स्त्री मनोभावों के माध्यम से नारी की श्रेष्ठता को रेखांकित करने का प्रयास किया है। कामायनी की श्रद्धा अगाध प्रेम ममता का प्रतिबिंब है वह मनु और समाज के कल्याण के लिए आत्म समर्पण करने हेतु प्रस्तुत है :

समर्पण को सेवा का सार
सजल संसृति की यह पतवार
आज से यह जीवन उत्सर्ग
इसी पदतल में विगत विचार।3

श्रद्धा मनु के हृदय का स्पंदन है जो प्राणों का संरक्षण करती है। मनु की चंचलता के आगे श्रद्धा अडिग खड़ी रहती है और तनिक भी उसे पथ से विरक्त नहीं होने देती। प्रसाद की नारी का वास्तविक एवं सत्य रूप कामायनी में प्रतिबिंबित होता है श्रद्धा का चरित्र एक सर्वगुण स्त्री के रूप में किया गया है। श्रद्धा सिर्फ मनु की सहचारी नहीं है, अपितु उसकी प्रेरणा है जो मनु को आगे बढ़ाने जीवन में रत होने के लिए प्रेरित करती है। जयशंकर प्रसाद की यह सबसे बड़ी विशेषता है कि वे अपने साहित्य में स्त्री पात्रों का चित्रण करते समय इतने सजग रहते हैं कि उनके व्यक्तित्व का हर एक पक्ष स्पष्ट दिखाई देता है।

जयशंकर प्रसाद जी की साहित्य साधना का प्राण तत्व सामाजिक चेतना है समाज के वास्तविक स्वरूप को उभारना और स्त्री के महत्व को प्रतिपादित करना प्रसाद जी के लेखन का उद्देश्य परिलक्षित होता है। किसी भी रचना की श्रेष्ठता उसके पात्रों या चरित्रों की सजीवता पर निर्भर करती है। उसी के माध्यम से कथा या संवाद को आगे बढ़ाया जाता है। जयशंकर प्रसाद के साहित्य में स्त्री को अनेक रूपों में दर्शाया गया है, कहीं वह किसलय से भी कोमल भावों से युक्त है तो कहीं वज्र से भी कठोर होकर अन्याय के आगे डटकर खड़ी हुई है, वह स्वयं के अस्तित्व को जानती भी है और आवश्यकता पड़ने पर समाज को अपने अस्तित्व के बारे में बताती भी है। कामायनी महाकाव्य में श्रद्धा मनु से कहती है :

तुम भूल गए पुरुषत्व मोह में
कुछ सत्ता है नारी की।
समरसता है संबंध बनी
अधिकार और अधिकारी की।।4

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में स्त्री दया, भीख की आकांक्षी नहीं है। वह अपने जीवन के कष्टों को दबाकर रखती है उन्हें किसी के सामने प्रकट करके सहानुभूति पाना उसे पसंद नहीं है। वह स्वाभिमानी है। इरावती नाटक की मुख्य पात्र कहती है :

"स्त्री के लिए जब देखा कि स्वावलंबन का उपाय कल के अतिरिक्त दूसरा नहीं तब उसी का आश्रय लेकर जी रही हूं मुझे अपने में जीने दो'।5

"देव ! यह मेरे पितृ पितामहों की भूमि है इसे बेचना अपराध है अतः मूल्य स्वीकार करना मेरे सामर्थ्य के बाहर है।"6

जयशंकर प्रसाद अपने नारी पात्रों से स्त्री सुलभ कोमलता, प्रेम और त्याग की अपेक्षा तो रखते हैं, लेकिन आत्म सम्मान की रक्षा के लिए उनके विद्रोही स्वरूप की कामना भी करते हैं। प्रसाद अपनी किसी भी रचना में यह स्वीकार नहीं करते स्त्री किसी भी दृष्टि से पुरुषों से कमजोर है। छायावादी कवि होने के नाते जयशंकर प्रसाद के साहित्य में स्त्री के चरित्र में कोमलता, प्रेम, त्याग, समर्पण जैसी भावनाएं रोम-रोम में पिरोई हुई है लेकिन जब-जब प्रसाद जी को अवसर मिला उन्होंने अपने साहित्य की स्त्री में वीरता, स्वाभिमान, आत्म संयम और वाकपटुता का माणिक कंचन संयोग कर अपने स्त्री चरित्रों को और भी विशेष बना दिया है।

ध्रुवस्वामिनी नाटक की मुख्य पात्र ध्रुवस्वामिनी स्वयं को उपहार दिए जाने का विरोध करते हुए दोटूक शब्दों में रहते हैं कि :

"निर्लज्ज ! मद्धप, क्लीव !!! ओह तो मेरा कोई रक्षक नहीं ? (ठहरकर) नहीं मैं तो अपनी रक्षा स्वयं करूंगी। मैं उपहार में देने की वस्तु शीतलमणी नहीं हूं। मुझ में रक्त की तरल लालिमा है। मेरा हृदय उष्ण है और उसमें आत्म सम्मान की ज्योति है। उसकी रक्षा मैं ही करूंगी (रसना से कृपाण निकाल देती है)7

जयशंकर प्रसाद अपने नाट्य साहित्य में स्त्री के गौरव में इतिहास को अनेक संदर्भ में प्रस्तुत करते हैं और उनकी वर्तमान स्थिति के लिए पुरुष समाज की मानसिकता को जिम्मेदार ठहराते हैं। प्रसाद के

नाटकों में स्त्री पात्र ज्वलंत विषय पर बेबाक होकर अपनी बात रखते हैं और सही और गलत के बीच विभेद भी जानती हैं। ध्रुवस्वामिनी नाटक में मंदाकिनी कहती है :

"राजा कब है मंदा का गला नहीं काट सकता। तुम लोगों को यदि कुछ भी बुद्धि होती तो इस अपनी कुल की मर्यादा नारी को शत्रु के दुर्ग में यों ने भेजते। भगवान ने स्त्रियों को उत्पन्न करके अधिकारों से वंचित नहीं किया है। किंतु तुम लोगों की दस्यु वृत्ति ने उन्हें लूटा है इस परिषद से मेरी प्रार्थना है कि समुद्रगुप्त के विधान तोड़कर जिन लोगों ने राज किल्विष किया है उन्हें दंड मिलना चाहिए।"8

'तितली' उपन्यास में प्रसाद जी ने स्त्री शिक्षा के महत्व को स्पष्ट किया है। यह उपन्यास मूलतः कृषि और ग्रामीण जीवन को केंद्र में रखकर स्त्री के इर्द-गिर्द बन गया है। तितली प्रसाद की वह स्त्री पात्र है जो स्वाभिमान की प्रतिमूर्ति है। वह अपने पति मधुकर को सजा हो जानेए बंजरिया पर लगान लग जाने के उपरांत भी दया की भीख मांगने की अपेक्षा अपनी मेहनत का आश्रय लेती है और लड़कियों की पाठशाला के माध्यम से समाज की स्त्रियों को सुशिक्षित करने का पुण्य कर्म करती है।वास्तविक रूप में अपने स्वाभिमान के दम पर अपने अस्तित्व की लड़ाई तितली है।

'तितली' के चरित्र में कामायनी महाकाव्य की श्रद्धा और इड़ा इन दोनों के चारित्रिक गुणों की परछाई दिखाई देती है। लगान न चुकाने पर बनजरिया जमीन भी जमीनदार के पास चली जाएगी। यह सुनकर तितली अपना अंगूठी छल्ला राजकुमारी के सामने रख देती है और कहती है, "इसको बेचकर रुपए लाओ जीजी। लगान का रुपया देकर जो बचे उसे एक दालान यहीं बनवाना होगा मैं यहां पर कन्या पाठशाला चलाऊंगी और खेती के समान में जो कुछ कमी हो उसे पूरा करना होगा। गायें बेच दो आवश्यकता हो तो बैल खरीद लो। तुम देखो खेती का काम और मैं पढ़ाई करुंगी।"9

तितली के पुरुषार्थ से वाट्सन, इंद्रदेव और शैला प्रभावित हो जाते हैं और उसकी आर्थिक सहायता करना चाहते हैं लेकिन वह उनकी सहायता लेने से मना कर देती है, वह कहती है :

"मैं दो आने लड़कियों से महीना पाती हूं और उतने में पाठशाला का काम अच्छे से चल जाता है कुछ मुझे बच भी रहा है। जमींदार ने मेरे पुरखों की डीह ले ली। मुझे माफी पर भी लगान देना पड़ रहा है और मुझे इस विपत्ति में डालने वाले हैं यहां के जमींदार और तहसीलदार साहब। तब भी आप लोग कहते हैं कि मैं उन्हीं लोगों से सहायता लूं।'10

प्रसाद जी के साहित्य में स्त्री सामाजिक दायरे से ग्रस्त होने के उपरांत भी स्वाभिमान, त्याग, संघर्ष और स्वावलंबन एवं प्रेम के गहनों से सुसज्जित है। उसका व्यक्तित्व अवसर आने पर अंधेरे में भी जगमगाने लगता है।

जयशंकर प्रसाद के उपन्यास इरावती की नारी पात्र इरावती एक अज्ञातकुल शीला बालिका है। वह महाकाल मंदिर में देवदासी का जीवन व्यतीत करती है। कामुक बृहस्पति मित्र की कामुकता का शिकार होने के उपरांत भी वह अपने कष्टों को उजागर करके सहानुभूति का पात्र नहीं बनना चाहती। वह अग्निमित्र से कहती है, "स्त्री के लिए जब देखा कि स्वावलंबन का उपाय कला के अतिरिक्त दूसरा नहीं तब उसी का आश्रय लेकर जी रही हूं। मुझे अपने में जीने दो।'11

'सालवती' कहानी की स्त्री पात्र सालवती दया की भीख नहीं मांगती। वह कहती है, "ठीक है मैं अनुग्रह नहीं चाहती। अनुग्रह लेने से मनुष्य कृतज्ञ होता है। कृतज्ञता परतंत्र बनाती है।"12

नाटकों में प्रसाद का दृष्टिकोण ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक अधिक है। इतिहास के द्वारा जयशंकर प्रसाद राष्ट्र की खोई हुई चेतन लौटना चाहते हैं प्रसाद का विश्वास है कि इतिहास का पुनर्जागरण राष्ट्र के उत्थान के लिए आवश्यक है।

कुल मिलाकर प्रसाद जी ने नारी को प्राचीन भारतीय आदर्श, छायावादी भावनाओं और रोमानी कल्पनाओं में बांधकर एक ऐसा स्वरूप प्रदान किया है कि उनके साहित्य में नारीअर्द्ध सत्यों को लेकर अवतरित हुई सी लगती है।

जयशंकर प्रसाद उस संक्रमण काल के लेखक हैं, जब नारी पहली बार घर की चौखट को लांघकर घर से बाहर निकले और चौके.चूल्हे के अलावा देश की आजादी जैसे विषय पर चर्चा करने लगी और खुले आसमान को निहारने का सौभाग्य उसे प्राप्त हुआ। जयशंकर प्रसाद अपनी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों के साथ ऐतिहासिक नाटकों में स्त्री पात्रों के महानता पर मुग्ध नजर आते हैं। स्कंदगुप्त नाटक में कई ऐसे नारीचर हैं जो इस महानता का प्रतिनिधित्व करते हैं। देवसेना भी महान गुणों से युक्त है वह कहती है, "मानव का महत्व तो रहेगा ही, उसका उद्देश्य भी सफल होना चाहिए। आपको अकर्मण्य बनाने के लिए देवसेना जीवित नहीं रहेगी।"13

'कामायनी' और और 'ध्रुवस्वामिनी' इन दो रचनाओं का नामकरण जयशंकर प्रसाद की स्त्री चेतना का परिचायक है। स्त्री प्रधान यह दोनों रचनाएं अपने काल की श्रेष्ठतम कृति हैं और स्त्री के आदर्श रूप के साथ-साथ उसके अधिकारों को भी उजागर करती हैं।

प्रसाद के चरित्रों में जहां सशक्त वीरता है वहीं वेदना का स्वर भी है। प्रसाद की मधुर भावना एवं कल्पना नारी चित्रण में अधिक रमी है, किंतु उसके विकर्षण और भयावह कल्पना को भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। जयशंकर प्रसाद के नाटकों में मनोवैज्ञानिक अंतर्द्वंद्व का कसावट भरा वर्णन किया गया है साथ ही राष्ट्रीयता की भावना को पोषित करना प्रसाद का परम उद्देश्य रहा है।

भारतीय संस्कृति से प्रभावित कार्नेलिया चंद्रगुप्त के व्यक्तित्व से प्रभावित होकर उससे प्रेम करने लगती है। कार्नेलिया के माध्यम से प्रसाद भारतभूमि की महानता को बताते हुए लिखते हैं :

"मुझे इस देश से जन्मभूमि के समान ही स्नेह होता जा रहा है। यहां के श्यामल कुंज, घने जंगल, सरिताओं की माला पहने हुए शैल श्रेणी, हरी-भरी वर्षा, गर्मी की चांदनी, शीतकाल की धूप, भोले कृषक तथा सरल कृषक बालाएं बाल्यकाल की सुनी हुई कहानियों की प्रतिमाएं हैं। यह है सपनों का देश, त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रंगभूमि भारत भूमि क्या भुलाई जा सकती है ? कदापि नहीं। अन्य देश मनुष्य की जन्मभूमि है यह भारत मानवता की जन्म भूमिहै।"14

प्रसाद जी के विचार निरंतर प्रवाहमान हैं। जिस प्रकार बहता जल निर्मल होता है ठीक उसी प्रकार समय के साथ बदलती विचारधारा सदैव प्रासंगिक होती है। जयशंकर प्रसाद जी के साहित्य में भी विचारों का यह विकास क्रम निरंतर दिखाई देता है। प्राचीन परंपरा और संबंधों को सनातन मानने वाले लेखक ध्रुवस्वामिनी तक आते-आते रिश्तों को ढोने की अपेक्षा अलग हो जाने के वकालत करते हैं। "प्रसाद जी ने ध्रुवस्वामिनी का चरित्र अंकित करते हुए कुशलता का परिचय दिया है उसका गत्यात्मक और

परिवर्तनशील चरित्र परिस्थितियों की देन है। नाटक में आद्यंत व्यापक रहने वालेइस चरित्र में बौद्धिकता देखने का प्रयास किया गया है।"15

किसी भी रचनाकार की सफलता उसकी रचना की कसावट, चरित्र चित्रण और कथानक पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से जयशंकर प्रसाद का साहित्य विविधता का भंडार है। ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर लिखे गए उनके नाटक अपने आप में पर्याप्त भिन्न हैं। स्त्री चरित्र के उत्थान और पतन दोनों की पराकाष्ठा दृष्टिगोचर होती है। प्रसाद जी के साहित्य में स्त्री लोक परंपराओं का निर्वहन तो करती है साथ ही लेखन में परिपक्वता आते-आते वह अपने अधिकारों के लिए भी मुखर होती है। एक ओर जहां वह सौंदर्य और प्रेम की प्रतिमूर्ति है दूसरी ओर उसे अपने स्वाभिमान की भी चिंता है, फिर चाहे वह पुरस्कार' की मधुलिका हो, 'इरावती' की इरावती हो या फिर स्वयं ध्रुवस्वामिनी। जयशंकर प्रसाद ने अपने स्त्री चरित्रों को सामान्य होते हुए भी सदा विशेष बनाए रखा।

जयशंकर प्रसाद के साहित्य में स्त्री चेतना जबरदस्त है। प्रसाद के स्त्री पात्र किंकर्तव्यविमूढ़ की स्थिति में नहीं हैं। वे अपने निर्णय त्वरित लेती हैं और स्वतंत्र रूप से लेती हैं। "वह मेरा निर्वाचित है। मैं चाहे ब्याह करूं या नहीं वह तो सुरक्षित रहेगा, समझी लीला।"16

प्रसाद के साहित्य में स्त्री चेतना के जितने प्रसंग मिलते हैं अन्य किसी कवि या लेखक के साहित्य में नहीं मिलते। प्रसाद जी ने नारी पात्रों में सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रकार के चित्रों का चित्रण किया है, किंतु प्रसाद जी का झुकाव सदैव नारी के मूल ममतामयी स्वरूप की ओर रहा। इसलिए उन्होंने अपने साहित्य में भी कमोबेश विकृत पात्रों में भी सकारात्मक भाव स्थापित करने का प्रयास किया है। अनंत देवी का षड्यंत्रकारी चरित्र है, परंतु प्रसाद जी ने उसकी महत्वाकांक्षा को स्त्री विमर्श के रंग में रंग कर कुछ इस प्रकार प्रस्तुत किया है, शुद्ध हृदय जो चूहे के शब्द से भी शंकित होते हैं, जो अपनी सांसों से भी चौंक उठाते हैं उनके लिए उन्नति का कंटकित मार्ग नहीं है। महत्वाकांक्षा का दुर्गम स्वर्ग उनके लिए स्वप्न है।"17

इस प्रकार हम देखते हैं कि जयशंकर प्रसाद के कथा साहित्य, नाट्य साहित्य और कविताओं इन सभी रचनाओं में स्त्री चेतना को लेकर बड़े स्तर पर काम किया गया है। जयशंकर प्रसाद की स्त्री स्वाभिमानी है स्वतंत्र है, स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रस्तुत है और सबसे बड़ी बात वह अपने उसूलों के साथ समझौता करने को तैयार नहीं है। जयशंकर प्रसाद की गणना उन साहित्यकारों में होती है जो इतिहास के आलोक में वर्तमान को पुष्ट करते हैं और एक सुखद भविष्य का स्वप्न संजोकर समाज के सम्मुख आदर्श चरित्र प्रस्तुत करते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 मनुस्मृति अध्याय 3

2 आंसू, जयशंकर प्रसाद

3 कामायनी, जयशंकर प्रसाद

4 कामायनी, जयशंकर प्रसाद

5 इरावती, जयशंकर प्रसाद

6 पुरस्कार, जयशंकर प्रसाद

7 ध्रुवस्वामिनी, जयशंकर प्रसाद

8 ध्रुवस्वामिनी, जयशंकर प्रसाद

9 तितली, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ206

10 तितली, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ 226

11 इरावती, जयशंकर प्रसाद

12 सालवती, जयशंकर प्रसाद

13 स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद

14 चन्द्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ठ126

15 प्रसाद के नाटकों का शास्त्रीय अध्ययन, पृष्ठ198

16 कामना, जयशंकर प्रसाद

17 स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद